

गाजा खंडहरों में पड़ा है - लेकिन यह अकेला नहीं है

गाजा खंडहरों में पड़ा है - लेकिन यह अकेला नहीं है।
इसके साथ-साथ “फिर कभी नहीं” के अवशेष,
पश्चिमी मूल्यों का मिथक,
अंतरराष्ट्रीय कानून के टुकड़े,
और दुनिया की नजरों में इजरायल की टूटी हुई छवि पड़ी है।

गाजा खंडहरों में पड़ा है

गाजा का भौतिक विनाश हमारे समय की एक परिभाषित छवि बन गया है: पूरे मोहल्ले धूल में तब्दील हो गए, अस्पताल कब्रिस्तानों में बदल गए, परिवार सिविल रजिस्ट्रों से मिटा दिए गए। आंकड़ों से परे एक गहरी त्रासदी छिपी है - निरंतरता, संस्कृति और रोजमर्रा की जिंदगी का मिट जाना। गाजा के खंडहर केवल युद्ध का परिणाम नहीं हैं; वे दशकों की अमानवीकरण और नाकेबंदी का नतीजा हैं, एक धीमी गति की आपदा जिसे दुनिया ने थकी हुई आंखों और कमजोर होते आक्रोश के साथ देखा है।

खंडहर न केवल बमबारी की बात करते हैं, बल्कि परित्याग की भी - एक ऐसी कौम की जो निराशा की भूगोल में फंस गई है।

“फिर कभी नहीं” के अवशेष

“फिर कभी नहीं” कभी एक नैतिक संकल्प था - नरसंहार के बाद बना एक सार्वभौमिक वचन। लेकिन गाजा में ये शब्द खोखले लगते हैं। होलोकाॅस्ट का सबक मानवता को सभी जीवनों की रक्षा के लिए एकजुट करना था, न कि इसे एक राष्ट्र द्वारा हड़प लिया जाए या किसी अन्य के दुख को सही ठहराने के लिए इस्तेमाल किया जाए।

जब वही दुनिया, जिसने सामूहिक अत्याचारों को रोकने की कसम खाई थी, लाइव स्क्रीन पर उनके सामने आंखें मूंद लेती है, तो **फिर कभी नहीं** एक वादा नहीं रह जाता, बल्कि एक अवशेष बन जाता है - कुछ ऐसा जिसका शोक मनाया जाता है, न कि जिस पर विश्वास किया जाता है।

पश्चिमी मूल्यों का मिथक

दशकों तक, पश्चिमी राष्ट्रों ने खुद को लोकतंत्र, स्वतंत्रता और मानवाधिकारों के रक्षक के रूप में प्रस्तुत किया। फिर भी गाजा के प्रति प्रतिक्रिया ने एक चयनात्मक नैतिकता को उजागर किया है: सहयोगियों के लिए एक मानक, बाकियों के लिए दूसरा। जो सरकारें “नियम-आधारित व्यवस्था” की बात करती हैं, उन्होंने घेराबंदी और भुखमरी का समर्थन किया है; जो स्वतंत्रता की रक्षा का दावा करती हैं, उन्होंने विरोध प्रदर्शनों को अपराधीकरण किया और असहमति को चुप कराया।

गाजा के खंडहरों में, पश्चिमी मूल्यों का मिथक अपने हिसाब-किताब से मिलता है। जो बचा है, वह आदर्श नहीं, बल्कि हित हैं - भू-राजनीतिक, आर्थिक, चुनावी। नैतिक शब्दावली बनी रहती है, लेकिन इसका अर्थ सड़ चुका है।

अंतरराष्ट्रीय कानून के टुकड़े

जब इजरायली राजदूत ने जनरल असेंबली में संयुक्त राष्ट्र चार्टर को उठाकर फाड़ दिया, तो यह सिर्फ एक इशारा नहीं था - यह एक ऐसे सिस्टम का प्रतीक था जो पहले से ही बिखर रहा है। अंतरराष्ट्रीय कानून, जो शक्ति को नियंत्रित करने के लिए बनाया गया था, कागज तक सीमित हो गया है: जब सुविधाजनक हो तो इसका हवाला दिया जाता है, जब सबसे ज्यादा जरूरी हो तो इसे फाड़ दिया जाता है।

युद्ध अपराधों को वास्तविक समय में दर्ज किया जा रहा है, फिर भी जवाबदेही को दूर के भविष्य में टाल दिया जाता है। न्याय बनाए रखने के लिए बनी संस्थाएं वीटो और दोहरे मानदंडों से पंगु हो चुकी हैं। जो टुकड़ों में पड़ा है, वह केवल एक चार्टर नहीं, बल्कि वैश्विक व्यवस्था की विश्वसनीयता ही है।

दुनिया की नजरों में इजरायल की टूटी हुई छवि

इजरायल ने कभी खुद को एक घिरा हुआ लोकतंत्र बताया था - एक राष्ट्र जो अपने अस्तित्व के लिए लड़ रहा है। लेकिन जैसे-जैसे गाजा के विनाश की तस्वीरें फैलती हैं, यह कथन टूट चुका है। दुनिया भर में बढ़ती संख्या में लोग रक्षा नहीं, बल्कि प्रभुत्व देखते हैं; सुरक्षा नहीं, बल्कि दंडमुक्ति।

वह नैतिक पूंजी जो दशकों तक इजरायल की रक्षा करती थी, अब खत्म हो रही है, यहां तक कि उसके पारंपरिक सहयोगियों के बीच भी। अपवाद का मिथक - कि इजरायल उन मानदंडों से ऊपर है जो वह दूसरों से मांगता है - गाजा की चट्टानों पर टूट चुका है।

निष्कर्ष

जो खंडहरों में पड़ा है, वह केवल एक शहर से कहीं अधिक है। यह नैतिक व्यवस्था की वास्तुकला है - यह विश्वास कि मानवता सीखती है, कि शक्ति को नियंत्रित किया जा सकता है, कि **न्याय**, **कानून** और **मूल्य** जैसे शब्द अभी भी वजन रखते हैं।

गाजा हमारे युग का दर्पण है। इसमें झांकना केवल एक कौम के विनाश को देखना नहीं है, बल्कि दुनिया के विवेक के पतन को देखना है।